

बौद्ध धर्म के प्रसार पर प्रकाश डालें —

भूमिका :

गौतम बुद्ध के उपदेशों में करुणा, अहिंसा, समानता और मध्यम मार्ग का संदेश था। यही कारण है कि बौद्ध धर्म भारत की सीमाओं से निकलकर एशिया के अनेक देशों में फैल गया। इसका प्रसार केवल धार्मिक ही नहीं, बल्कि सांस्कृतिक और दार्शनिक आंदोलन के रूप में भी हुआ।

१. भारत में बौद्ध धर्म का प्रसार

गौतम बुद्ध के जीवनकाल में:

बुद्ध ने बिहार, उत्तर प्रदेश और नेपाल के तराई क्षेत्र में अपने उपदेश दिए। उनके शिष्य संघों और विहारों के माध्यम से उपदेशों का प्रचार करते रहे।

मौर्य काल में (विशेषकर अशोक के समय):

सम्राट अशोक ने कलिंग युद्ध के बाद बौद्ध धर्म अपनाया और इसे राज्य-धर्म के रूप में संरक्षण दिया।

उन्होंने धर्म प्रचारकों को भारत के विभिन्न भागों में भेजा।

अशोक के स्तंभ, शिलालेख और स्तूप बौद्ध धर्म के प्रचार के स्थायी प्रतीक बने।

बाद के काल में:

गुप्त काल में हिंदू धर्म के पुनरुत्थान के बावजूद बौद्ध धर्म बिहार, बंगाल, कश्मीर और दक्षिण भारत में विद्यमान रहा।

२. विदेशों में बौद्ध धर्म का प्रसार

(क) श्रीलंका:

अशोक के पुत्र महेंद्र और पुत्री संघमित्रा ने बौद्ध धर्म का प्रचार किया। वहाँ यह थेरवाद रूप में आज भी प्रमुख है।

(ख) दक्षिण-पूर्व एशिया:

बौद्ध धर्म बर्मा (म्यांमार), थाईलैंड, कंबोडिया और लाओस में पहुँचा। यहाँ भी हीनयान (थेरवाद) परंपरा प्रचलित हुई।

(ग) मध्य एशिया और चीन:

सिल्क रूट के माध्यम से व्यापारी और भिक्षु बौद्ध धर्म को चीन तक ले गए।

चीनी भिक्षु फाह्यान, ह्वेनसांग और ई-त्सिंग भारत आए और बौद्ध ग्रंथों का अनुवाद किया।

(घ) कोरिया और जापान:

चीन से होते हुए बौद्ध धर्म कोरिया और जापान पहुँचा।

यहाँ यह महायान रूप में विकसित हुआ और ज़ेन बौद्ध धर्म के रूप में प्रसिद्ध हुआ।

(ङ) तिब्बत और मंगोलिया:

7वीं शताब्दी में बौद्ध धर्म तिब्बत पहुँचा, जहाँ यह वज्रयान के रूप में विकसित हुआ।

दलाई लामा इसी परंपरा के आध्यात्मिक प्रमुख हैं।

3. बौद्ध धर्म के प्रसार के साधन

संघ और विहारों की स्थापना।

राजाओं का संरक्षण (विशेषकर अशोक और कनिष्क)।

व्यापारिक मार्गों (सिल्क रूट) से भिक्षुओं और यात्रियों का आवागमन।

स्थानीय भाषाओं में ग्रंथों का अनुवाद।

बौद्ध कला, मूर्तिकला और वास्तुकला के माध्यम से सांस्कृतिक प्रभाव।

4. निष्कर्ष :

बौद्ध धर्म का प्रसार शांतिपूर्ण, संवादात्मक और नैतिक था। इसने मानवता को अहिंसा, सहिष्णुता और आत्मानुशासन का मार्ग दिखाया। आज भी एशिया के अनेक देशों में यह धर्म केवल आस्था नहीं, बल्कि जीवन का दर्शन है।